# शीला का साहस

शीला अपने माता पिता की इकलौती लड़की थी। उसके तीन भाई थे। तीनों ही पढ़ने में बड़े कमज़ोर और आलसी थे। एक-एक क्लास में दो-दो साल लगाते। हर समय शीला को चिढ़ाते और तंग करे रहते। शीला अपने पिता से कहती लेकिन कोई फ़ायदा नहीं होता। पिता अपने तीनों बेटों को खूब मानते थे। शीला को तो वे हमेशा ही बोझ समझते थे। वे हमेशा कहते कि "अगर शीला भी मेरा बेटा होता तो मुझे दहेज की चिंता तो नहीं करनी पड़ती।" ऐसे समय में शीला की मां अपने पति को समझाती "बेटे-बेटी में आजकल कोई फर्क नहीं होता फिर लेकिन शीला के पिता को कुछ समझ में नहीं आता वे तो कहते थे—"घी के लड्डू तो टेढ़े भी भले होते हैं।"

शीला अपने भाइयों से छोटी थी। वह अब दसवीं क्लास में आ चुकी थी और उसके भाईयों में से कोई नवीं भी पास नहीं कर सका था। शीला के पिता चाह रहे थे कि अब शीला के हाथ पीले हो जाएं। पर शीला आगे पढ़ना चाहती थी। दो दिन बाद लड़के वाले शीला को देखने के लिए आने वाले थे। शीला ने अपनी मां से कहा कि वह अभी शादी नहीं करेगी। कम से कम बारहवीं तक पढ़ेगी।

मां ने पिता को समझाया—"शीला बारहवीं करना चाहती है कर लेने दो। दो साल की तो बात है। फिर अभी तो हमारी शीला बच्ची है। थोड़ा और पढ़ लिख लेगी तो और समझदार हो जाएगी।" पर शीला के पिता नहीं माने। उन्हें तो ज़िद सवार थी। शीला ने भी विरोध किया। उसने अपने पिता से कहा कि अगर उन्होंने ज़बरदस्ती की तो वह पुलिस में रिपोर्ट कर देगी काफी समझाने बुझाने के बाद शीला के पिता ने उसकी शादी दो साल टालने के लिए राज़ी हो गए।

शीला ने दसवीं की परीक्षा दी। उसके अपने स्कूल में सबसे ज्यादा नंबर आए थे। अब उसे वज़ीफ़ा मिलने लगा था। शीला के पिता को अब उसकी पढ़ाई का खर्चा नहीं देना पड़ता था। धीरे-धीरे दो साल भी गुजर गए। बारहवीं की परीक्षा में भी शीला अच्छे नंबरों से पास हुई। उसके भाई तो बिल्कुल ही निकम्मे हो चुके थे। पिता कहते—"सर पर ज़िम्मेदारी आएगी तो सब ठीक हो जाएगा।"

पर शीला के प्रति पिता का रवैया अब भी नहीं बदला था। दो साल बीत चुके थे इसलिए उन्होंने फिर से शीला के लिए लड़के की तलाश शुरू कर दी।

शीला ने इन दो सालों के अपने जेब खर्च के सारे पैसे बचाकर रखे थे। बारहवीं पास की और किताबें खरीदकर तैयारी शुरू कर दी। उसने अपने पिता को इस बारे में कुछ भी नहीं बताया। शीला पढ़ने में तो तेज थी ही उसका पर्चा अच्छा हो गया। कुछ ही समय बाद उसकी शादी हो गई। चार महीने के बाद शीला को परीक्षा में पास होने की खबर अपनी एक सहेली से मिली। शीला ने अपने पति को बताया क्योंकि अब उसे

इंटरव्यू के लिए जाना था। शीला का पति समझदार था। वह भी अपनी पत्नी की काबलियत पर खुश हुआ। शीला इंटरव्यू में पास हो गई। अब वह नौकरी करती थी और बहुत खुश थी।

काफ़ी समय गुजर गया। उसके पिता ने अपने तीनों लड़कों की शादी कर दी। वे कहते थे—"शीला की शादी के बाद हमारा घर तो बिल्कुल खाली हो गया है। उसको तो भरना ही है।"

लेकिन शादी के बाद लड़कों ने अपना-अपना हिस्सा लेकर अपने-अपने अलग घर बसा लिए। अब पिता को कोई नहीं पूछता था। जो थोड़ा बहुत कर्ज उनके ऊपर था उसे भी चुकाने में लड़कों ने सांझा करने से साफ इंकार कर दिया। शीला के पिता को बड़ा सदमा पहुंचा। वे बीमार रहने लगे। खर्चे बहुत थे पर कमाने वाला कोई नहीं। घर की हालत बहुत खराब रहने लगी।

शीला को जब अपने पिता की हालत का पता चला तो वह बहुत दुखी हुई। वह अपने माता-पिता के पास आई। उनसे साथ चलने को कहा। पिता बड़े शर्मिंदा हुए। जिस बेटी को उन्होंने हमेशा बोझ समझा था वो आज उनकी इतनी सेवा कर रही है। उन्हें बेटी के घर जाकर रहना अच्छा नहीं लग रहा था पर बेटी और दामाद के आगे उनकी एक न चली।

अब उन्हें महसूस हो रहा था—"सचमुच बेटे और बेटी में कोई अंतर नहीं है। बल्कि आजकल तो बेटियां ही बेटों के काम करती हैं।" शीला ने यह साबित कर दिया था। □

रचना तिवारी